कहते हैं। वास्तव में इस ज्योति का स्रोत कृष्णलोक गोलोक-वृन्दावन है। इस तेजोमयी ज्योति के एक अंश पर महत्तत्त्व का आवरण है। यही प्राकृत-जगत् है। परन्तु ज्योतिर्मय परव्योम का अधिकांश तो वैकुण्ठ नामक दिव्य लोकों से ही परिपूर्ण है। गोलोक-वृन्दावन इन सबमें परमोच्च है।

जब तक जीव इस अंधकारमय प्राकृत-जगत् में है, तब तक वह उपाधियों में बँधा रहता है; परन्तु प्राकृत-जगत्रूपी उल्टे वृक्ष को काट कर वैकुण्ठ-जगत् में पहुँचते ही वह मुक्त हो जाता है। फिर उसके यहाँ आने का भय नहीं रहता। उपाधिबद्ध जीवन में जीव अपने को इस प्राकृत-जगत् का ईश्वर समझता है, परन्तु मुक्त हो जाने पर वैकुण्ठ-जगत् में प्रवेश कर श्रीभगवान् के पार्षद के रूप में सच्चिदानन्दमय जीवन का आस्वादन करता है।

मनुष्य को वैकुण्ठ-जगत् की इस जानकारी पर मुग्ध हो जाना चाहिए। इच्छा करे कि मैं इस संसार से, जो सच्चाई की विकृत छाया है, मुक्त होकर उस शाश्वत्-जगत् को प्राप्त हो जाऊँ। जो प्राकृत-जगत् में अति आसक्त हो, उसके लिए अवश्य इस आसक्ति का छेदन करना दुष्कर होगा। परन्तु यदि वह कृष्णभावना को अंगीकार कर ले, तो शनैः शनै. पूर्ण वैराग्य को प्राप्त हो सकता है। इसके लिए कृष्णभावनाभवित भक्तों का सत्संग करने की बड़ी अपेक्षा है। कल्याणकामी को एक ऐसे भक्तसमाज की खोज करनी चाहिए, जो कृष्णभावना के लिए समर्पित हो। इस प्रकार के भागवत-संघ में भक्तियोग की शिक्षा ग्रहण करने से प्राकृत-जगत् में आसक्ति की ग्रन्थी को काटा जा सकता है। केवल संन्यासी का वेष बना लेने से ही कोई प्राकृत-जगत् के आकर्षण से निर्लिप्त नहीं हो सकता। संसार से वैराग्य के लिए आवश्यक है कि भगवद्भक्तियोग में अनुराग हो। अतएव यह गम्भीरतापूर्वक समझ लेना चाहिए कि बारहवें अध्याय में वर्णित भक्तियोग सच्चे वृक्ष की इस असत् छाया से बाहर निकलने का एकमात्र उपाय है। चौदहवें अध्याय से स्पष्ट हो जाता है कि अन्य सब साधन माया से दूषित हैं, केवल भक्तियोग पूर्णरूप से दिव्य है।

परमं मम शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। वैसे तो सभी कुछ श्रीभगवान् की सम्पत्ति है; परन्तु वैकुण्ठ-जगत् **परमम्** है, अर्थात् विशेष रूप में छः प्रकार के ऐश्वर्यों से परिपूर्ण है। उपनिषदों में भी प्रमाण है कि वैकुण्ठ-जगत् में सूर्यज्योति-चन्द्रज्योति की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह पूर्ण रूप से श्रीभगवान् की अंतरंगा शक्ति द्वारा देदीप्यमान है। उस परमधाम की प्राप्ति का एकमात्र साधन श्रीभगवान् की शरण में जाना है।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्टानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।७।।

मम=मेरा; **एव**=ही; **अंशः**=भिन्न-अंश; **जीवलोके**=संसार में; **जीवभूतः**=बद्धजीव; **सनातनः**=नित्य; **मनः**=चित्त; **षष्ठानि**=छः; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियों सहित; **प्रकृतिस्थानि**=प्रकृति में स्थित; **कर्षति**=संघर्ष करता है।